सांख्य दर्शन: प्रकृति और पुरुष के द्वैत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

(Samkhya philosophy: An analytical study of the duality of nature and purusha)

लेखक: *Anand Singh Dhami*

प्रस्तुतकर्ता: *Indian Philosophy & Ethics*

विषय क्षेत्र: *Samkhya Philosophy, Prakriti, Purusha, Dualism, Satkaryavada, Kapila Muni, Samkhya Karika, Ishwar Krishna, Triguna, Moksha, Indian Philosophy, Shrimad Bhagavata Purana, Vaisheshika, Vedanta*

संक्षिप्त परिचय:- *सांख्य दर्शन भारतीय दर्शन की प्राचीन एवं महत्वपूर्ण आस्तिक परंपरा है, जो अपने द्वैतवादी सिद्धांत, विश्लेषणात्मक दृष्टि और निरीश्वरवादी प्रवृत्ति के लिए प्रसिद्ध है। यह दर्शन प्रकृति–पुरुष के द्वैत, सत्कार्यवाद के कार्य-कारण सिद्धांत तथा पच्चीस तत्त्वों के सृष्टि-विकास सिद्धांत पर आधारित है। साथ ही, इसके विचारों की अन्य दर्शनों और ग्रंथों में स्वीकृति तथा आधुनिक संदर्भों में इसकी प्रासंगिकता भी महत्वपूर्ण है। सांख्य दर्शन आज भी मानवीय दुःख के कारणों और उनके निवारण को समझने में उपयोगी दार्शनिक दृष्टिकोण प्रदान करता है।*

🔗 ऑनलाइन विस्तृत लेख: -

[*https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/01/samkhya-darshan-prakriti-purush-duality-modern-relevance.html*](https://indianphilosophyethics.blogspot.com/2026/01/samkhya-darshan-prakriti-purush-duality-modern-relevance.html)

© Anand Singh Dhami| Indian Philosophy & Ethics | Educational & Research Use

सांख्य दर्शन: प्रकृति और पुरुष के द्वैत का विश्लेषणात्मक अध्ययन

1. परिचय एवं महत्व

भारतीय चिंतन परंपरा में ज्ञान की अनेक धाराएँ प्रवाहित हैं, जिनमें सांख्य दर्शन अपनी तार्किकता, विश्लेषणात्मक पद्धति और विशुद्ध दार्शनिक प्रवृत्ति के कारण एक विशिष्ट स्थान रखता है। इसे अक्सर भारतीय दर्शन की *'आदि-विचारधारा'* कहा जाता है। इस दर्शन का मूल लक्ष्य **'दुखत्रय'** आध्यात्मिक, अधिभौतिक एवं आधिदैविक दुख से पीड़ित मानव को विवेकज्ञान के माध्यम से उसके मूल कारण का बोध कराकर सर्वोच्च मुक्ति (**कैवल्य**) प्राप्त करने का मार्ग प्रशस्त करना है। यह दर्शन किसी ईश्वरीय सत्ता या आस्तिक भावना पर निर्भर हुए बिना, शुद्ध तर्क और अवलोकन के आधार पर सृष्टि एवं चेतना के रहस्य को सुलझाने का प्रयास करता है। इस शोध पत्र का महत्व इसके व्यवस्थित, गहन एवं तुलनात्मक विश्लेषण में निहित है, जो न केवल सांख्य के शास्त्रीय सिद्धांतों को स्पष्ट करता है, बल्कि यह भी प्रदर्शित करता है कि किस प्रकार इसका ज्ञान अन्य ग्रंथों में समाहित हुआ और आधुनिक मानव के लिए इसकी उपयोगिता कैसे बनी हुई है।

2. ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं स्रोत ग्रंथ

सांख्य दर्शन की जड़ें अत्यंत प्राचीन हैं। इसके बीज विचार **नासदीय सूक्त** (ऋग्वेद 10.129) एवं प्राचीन उपनिषदों विशेषकर **कठोपनिषद्** एवं **श्वेताश्वतरोपनिषद्** में देखे जा सकते हैं, जहाँ *'अव्यक्त'*, '*बुद्धि'* एवं 'पुरुष' जैसे पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग हुआ है। सांख्य दर्शन के प्रवर्तक के रूप में **महर्षि कपिल** का नाम प्रसिद्ध है, जिनके विषय में प्रामाणिक ऐतिहासिक जानकारी का अभाव है, किंतु महाभारत, रामायण तथा पुराणों में इनका उल्लेख मिलता है। मान्यता है कि उन्होंने '**सांख्यसूत्र**' की रचना की थी, जो वर्तमान में उपलब्ध नहीं है। कपिल के बाद **आसुरि, पञ्चशिख, वार्षगण्य** आदि आचार्य हुए, किंतु सम्पूर्ण सांख्य व्यवस्था को सुसंगत रूप देने का श्रेय **आचार्य ईश्वरकृष्ण (लगभग 4थी शताब्दी ईस्वी)** को जाता है, जिन्होंने '**सांख्यकारिका**' नामक ग्रंथ की रचना की। मात्र 72 श्लोकों वाला यह ग्रंथ सांख्य दर्शन का सर्वाधिक प्रामाणिक, सारगर्भित एवं उपलब्ध आधारग्रंथ माना जाता है। इस पर बाद में अनेक भाष्य लिखे गए, जिनमें **वाचस्पति मिश्र (9वीं शताब्दी) द्वारा रचित 'सांख्यतत्त्वकौमुदी'** सर्वाधिक प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण है।

3. सांख्य दर्शन के मूलभूत सिद्धांतों का विश्लेषण

3.1 प्रकृति एवं पुरुष: मौलिक द्वैत का सिद्धांत

सांख्य दर्शन की समस्त व्यवस्था दो स्वतंत्र, नित्य एवं सर्वव्यापी मूल तत्त्वों **प्रकृति** और **पुरुष** के द्वैत पर आधारित है। यह द्वैतवाद इस दर्शन की आधारशिला है।

3.1.1. प्रकृति (Prakṛti):- प्रकृति जड़, अचेतन, त्रिगुणात्मक **(सत्, रज, तम**) एवं परिवर्तनशील मूलभूत पदार्थ है। यह समस्त सृष्टि का भौतिक एवं मानसिक कारण है। प्रकृति **अव्यक्त** (अप्रकट) एवं **व्यक्त** (प्रकट) दोनों रूपों में विद्यमान रहती है। जब तक तीनों गुण साम्यावस्था में रहते हैं, प्रकृति अव्यक्त रहती है। गुणों के साम्य के विषम होने पर ही सृष्टि-प्रक्रिया का प्रारंभ होता है।

3.1.2. पुरुष (Puruṣa):- पुरुष शुद्ध चेतना, निर्विकार, अकर्ता, द्रष्टा एवं साक्षी का स्वरूप है। यह नित्य, विभु एवं असंख्य है (अर्थात प्रत्येक जीव में एक अलग पुरुष है)। पुरुष साक्षी मात्र है; वह न तो कुछ करता है और न ही बदलता है। उसका एकमात्र प्रयोजन प्रकृति के साथ सम्बद्ध होकर अनुभव करना प्रतीत होता है।

3.1.3. संयोग एवं बंधन का कारण:- सांख्य के अनुसार, **अविद्या** (अज्ञान) के कारण चेतन पुरुष स्वयं को अचेतन प्रकृति के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेता है। इसी भ्रांत तादात्म्य के कारण पुरुष स्वयं को सीमित, कर्ता-भोक्ता एवं दुखी अनुभव करने लगता है। यही संसारी बंधन का मूल है।

3.2 सत्कार्यवाद: कार्य-कारण का सिद्धांत

सांख्य दर्शन **सत्कार्यवाद** के सिद्धांत को मानता है, जो उसके प्रकृतिवाद का आधार है। इस सिद्धांत के अनुसार, **कार्य, कारण में पहले से ही सूक्ष्म रूप में विद्यमान रहता है।** उत्पत्ति का अर्थ नवीन सृष्टि नहीं, बल्कि अव्यक्त रूप में विद्यमान वस्तु का व्यक्त (प्रकट) होना है। विनाश का अर्थ नाश नहीं, बल्कि वस्तु का पुनः अव्यक्त रूप में लौट जाना है। उदाहरण के लिए, घड़ा मिट्टी में पहले से ही अव्यक्त रूप में विद्यमान है; कुम्हार का कार्य केवल उसे व्यक्त रूप प्रदान करना है। यह सिद्धांत प्रकृति से सृष्टि के विकास की व्याख्या का आधार बनता है।

ब्लॉग पोस्ट पढ़ें - सांख्य दर्शन क्या है? प्रकृति और पुरुष का रहस्य

3.3 पच्चीस तत्त्वों का विकासक्रम

सत्कार्यवाद के आधार पर, सांख्य दर्शन प्रकृति से विश्व के क्रमिक विकास का सिद्धांत प्रस्तुत करता है। इसके अनुसार कुल **पच्चीस तत्त्व** हैं; एक प्रकृति, तेईस व्यक्त विकृति-तत्त्व, और एक पुरुष। विकास का क्रम इस प्रकार है:

सृष्टि-विकास का क्रम (पंचविंशति तत्त्वानि)

क्रम	तत्त्व	विवरण	सृष्टि का स्तर
1.	प्रकृति (अव्यक्त)	मूल जड़ सत्ता, त्रिगुणात्मिका	मूल कारण
2.	महत् (बुद्धि	विकास का प्रथम उत्पाद; निश्चय, विवेक व ज्ञान का स्थान	मानसिक
3.	अहंकार	अहंभाव की उत्पत्ति; तीन प्रकार का: सात्विक, राजसिक, तामसिक	मानसिक
4-8	पञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ	श्रोत्र, त्वक्, चक्षु, रसना, घ्राण (सुनने, स्पर्श, देखने, स्वाद, गंध)	सूक्ष्म/कार्यिक
9-13	पञ्च कर्मेन्द्रियाँ	वाक्, पाणि, पाद, पायु, उपस्थ (बोलने, पकड़ने, चलने, उत्सर्जन, प्रजनन)	सूक्ष्म/कार्यिक
14-18	पञ्च तन्मात्राएँ	शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध की सूक्ष्म अव्यक्त अनुभूतियाँ	सूक्ष्म/भौतिक
19-23	पञ्च महाभूत	आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी (तन्मात्राओं से उत्पन्न)	स्थूल/भौतिक
24	प्रकृति (पुनः)	उपर्युक्त सभी का मूल कारण	
25	पुरुष	शुद्ध चेतना, साक्षी, असंख्य	चैतन्य

यह विकासक्रम दर्शाता है कि कैसे अव्यक्त प्रकृति से सूक्ष्म मानसिक तत्त्वों, फिर सूक्ष्म इंद्रियों एवं तन्मात्राओं के माध्यम से, अंततः स्थूल पंचमहाभूतों की रचना होती है। **मन (मनस्)** को सांख्य में एक स्वतंत्र तत्त्व नहीं, बल्कि अंतःकरण (महत्, अहंकार व बुद्धि) का ही एक कार्यात्मक पहलू माना गया है। श्रीमद्भागवतपुराण में भी इसी प्रकार के सृष्टि-क्रम का वर्णन मिलता है।

3.4 त्रिगुण सिद्धांत

प्रकृति की समस्त गतिविधि एवं विविधता तीन गुणों **सत्त्व, रजस् और तमस्** के संयोग, संघर्ष एवं अनुपात पर निर्भर करती है।

3.4.1. **सत्त्व**- ज्ञान, प्रकाश, शांति एवं सात्विकता का गुण।

3.4.2. रजस्:- क्रिया, चंचलता, इच्छा एवं विक्षेप का गुण।

3.4.3. तमस्:- जड़ता, अज्ञान, आलस्य एवं निष्क्रियता का गुण।

इन गुणों का साम्यावस्था में होना ही प्रकृति की अव्यक्त अवस्था है। सृष्टि-प्रक्रिया इनके साम्य के विगठन से प्रारंभ होती है।

3.5 मोक्ष का सिद्धांत: विवेकज्ञान द्वारा कैवल्य

सांख्य दर्शन में मोक्ष (**कैवल्य**) का अर्थ है, पुरुष का प्रकृति से पूर्णतः पृथक् होकर अपने शुद्ध चैतन्य स्वरूप में स्थित हो जाना। यह मोक्ष **विवेकज्ञान** अर्थात **'मैं (पुरुष) प्रकृति नहीं हूँ'** के द्वारा ही प्राप्त होता है। इस ज्ञान के उदय होते ही पुरुष का प्रकृति के साथ भ्रांत तादात्म्य भंग हो जाता है। पुरुष अपने वास्तविक स्वरूप को पहचान लेता है और प्रकृति का नाटक देखता रह जाता है, उसमें उलझता नहीं। फलस्वरूप, उसे तीनों प्रकार के दुखों से पूर्ण मुक्ति प्राप्त हो जाती है। सांख्य के अनुसार, यह ज्ञान **श्रवण** (शास्त्राध्ययन), **मनन** (तार्किक चिंतन) एवं **निदिध्यासन** (गहन ध्यान) की प्रक्रिया से प्राप्त होता है। यह दर्शन ईश्वर, भक्ति या कर्मकांड को मोक्ष का साधन नहीं मानता।

4. सांख्य दर्शन की अन्य भारतीय दर्शनों से तुलना

सांख्य दर्शन का अन्य दर्शनों के साथ संवाद एवं विरोध दोनों रहा है।

4.1. वेदांत दर्शन के साथ तुलना:- यह तुलना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अद्वैत वेदांत *'ब्रह्म'* को एकमात्र सत्य मानता है और जगत को मिथ्या (अनित्य) कहता है, जबकि सांख्य प्रकृति एवं असंख्य पुरुषों को नित्य मानता है। एक दृष्टिकोण यह है कि यह विरोध सापेक्षिक है। सांख्य 'नित्यता' की बात **काल के भीतर** कर रहा है, जब तक समय (जो स्वयं प्रकृति है) है, तब तक प्रकृति और पुरुष हैं। वेदांत *'अनित्यता'* की बात **कालातीत परम सत्ता (ब्रह्म)** के संदर्भ में कर रहा है। दोनों ही अपने-अपने स्तर पर सत्य का प्रतिपादन करते हैं।

4.2. वैशेषिक दर्शन के साथ तुलना:- वैशेषिक **असत्कार्यवाद** मानता है, अर्थात कार्य उत्पत्ति से पूर्व कारण में नहीं रहता, यह नवीन सृष्टि है। यह सिद्धांत सांख्य के सत्कार्यवाद के सीधे विपरीत है। वैशेषिक परमाणुवाद को मानता है, जबकि सांख्य प्रकृतिवाद को।

4.1.1. योग दर्शन के साथ: योग दर्शन को सांख्य का *'व्यावहारिक भाई'* कहा जाता है। योग ने सांख्य के पच्चीस तत्त्वों के दार्शनिक ढाँचे को स्वीकार किया है, किंतु इसमें **ईश्वर** की अवधारणा

को जोड़ा गया है। योग मोक्ष प्राप्ति के लिए सांख्य के ज्ञानमार्ग के स्थान पर **अष्टांग योग** (यम-नियम से लेकर समाधि तक) की व्यावहारिक साधना पद्धति प्रस्तुत करता है।

5. श्रीमद्भागवतपुराण में सांख्य दर्शन का समावेश

श्रीमद्भागवतपुराण में सांख्य दर्शन के सिद्धांतों का विस्तृत वर्णन मिलता है, जो एक **सेश्वर** (ईश्वर सहित) दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। इसमें भगवान विष्णु के अवतार महर्षि कपिल अपनी माता देवहूति को सांख्य का ज्ञान देते हैं। यहाँ सृष्टि-क्रम का वर्णन भी प्रकृति, महत्, अहंकार आदि से होते हुए पंचमहाभूतों तक मिलता है। **तृतीय स्कन्ध** के दशम अध्याय में सृष्टि, **एकादश स्कन्ध** के 24वें अध्याय को *'सांख्य योग'* कहा गया है, और 25वें अध्याय में गुणों का विस्तार से वर्णन है। यह सांख्य के निरीश्वरवादी स्वरूप में एक ईश्वरीय तत्त्व का समन्वय प्रस्तुत करता है और दर्शाता है कि पौराणिक साहित्य दार्शनिक ज्ञान का भंडार है।

6. आलोचना, प्रासंगिकता एवं निष्कर्ष

सांख्य दर्शन की मुख्य आलोचनाएँ इसके **निरीश्वरवाद**, प्रकृति एवं पुरुष के बीच **अंतःक्रिया के स्पष्ट सिद्धांत के अभाव**, तथा **पुरुषों की असंख्यता** के सिद्धांत पर केंद्रित रही हैं। कुछ आलोचकों का मानना है कि अचेतन प्रकृति चेतन पुरुष के प्रति कैसे संवेदनशील हो सकती है, यह स्पष्ट नहीं है।

6.1. आधुनिक प्रासंगिकता

6.1.1. मनोविज्ञान में:- सांख्य का अहंकार, बुद्धि और मन का विश्लेषण आधुनिक मनोविज्ञान से मेल खाता है। त्रिगुण सिद्धांत व्यक्तित्व के विभिन्न प्रकारों को समझने में सहायक हो सकता है।

6.1.2. वैज्ञानिक दृष्टिकोण:- सृष्टि के क्रमिक विकास का सिद्धांत, यद्यपि आध्यात्मिक है, विकासवादी विचार से कुछ साम्य रखता है। सत्कार्यवाद में ऊर्जा-संरक्षण के नियम की झलक दिखाई देती है।

6.1.3. जीवन-दर्शन:- तनाव एवं चिंता से मुक्ति के लिए *'साक्षीभाव'* (द्रष्टा बनना) का सिद्धांत आज भी प्रासंगिक है। यह व्यक्ति को अपनी चंचल मनोवृत्तियों से अलग होकर देखने की कला सिखाता है।

Samkhya philosophy: An analytical study of the duality of nature and purusha, you can read in the blog post

निष्कर्ष

सांख्य दर्शन एक अत्यंत सुसंगत, तार्किक एवं गहन दार्शनिक प्रणाली है। इसने भारतीय चिंतन को प्रकृति-पुरुष का द्वैत, सत्कार्यवाद, त्रिगुण सिद्धांत एवं तत्त्वों का विश्लेषणात्मक ढाँचा प्रदान किया। यद्यपि यह निरीश्वरवादी है, इसके विचारों को भागवत जैसे ग्रंथों में सेश्वर रूप में आत्मसात किया गया। स्वामी विवेकानंद जैसे आधुनिक विचारकों ने भी सांख्य की तार्किक शक्ति की प्रशंसा की है। मानवीय दुख के मूल कारण और उसके निवारण हेतु ज्ञानमार्ग के इसके प्रतिपादन में एक शाश्वत सत्य निहित है। आज के भौतिकवादी युग में, जहाँ मानसिक अशांति एक वैश्विक समस्या है, सांख्य दर्शन द्वारा प्रतिपादित *'विवेक' एवं 'साक्षीभाव'* का सिद्धांत आंतरिक शांति प्राप्त करने का एक कारगर उपकरण सिद्ध हो सकता है।